03/09/19

पाठ-12

नीतिश्लोका:

उत्सवे - - - - - - - - - - - - बान्धवज

1. ⇒ उत्सव में सुख में अकाल पड़ने पर और शत्रु जब संकट में हो राजदरबार में श्मशान में जो आपके साथ हो वही आपका सच्चा मित्र है।

येषां - - - - - - - - - - - - मृगाश्चरन्ति

2. जिसके पास विद्या नहीं तप करने के लिए कुछ भी नहीं दान करने के लिए कुछ नहीं, ज्ञान नहीं, दया नहीं, कोई गुण नहीं और जिसका कोई धर्म तो इस मर्त्यलोक इस पृथ्वी पर भार के समान हैं। जो मनुष्य के रूप में पशु के भांति विचरण करते हैं।

एकपदेन उत्तरत :-

क-> पद्मपत्रस्थितं तोयं किं धत्ते? मुक्ताफलश्रियम्

ख-> सन्मित्रं किं निगूहति? गुह्यं

ग-> न्याय्यात्पथः के पदं न प्रविचलन्ति? धीरा:

घ-> मानो हि केषां धनम्? महतां

ङ-> वारि कदा विषप्रदम्? भोजनान्ते

पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत -

क-> मनुष्यरूपेण मृगा: के सन्ति?

⇒ येषां न विद्या न तपो न दानम्, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:। ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता:, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

Scanned by CamScanner

प्र० के के नृत्यं [illegible]?
उ० [illegible]

प्र० [illegible]
उ० [illegible]

प्र० [illegible]?
उ० [illegible]

सन्धिं / सन्धिविच्छेदं वा कुरुत :-

क) राजेव - राजा + इव
ख) बकास्तत्र - बकाः + तत्र
ग) मृगाश्चरन्ति - मृगाः + चरन्ति
घ) यावन्निवारयति - यावत् + निवारयति
ङ) अत्रैव - अत्र + एव
च) मुहुर्मुहुः - मुहुः + मुहुः
छ) मन्दा हि - मन्दाः + हि

श्लोकांशमेलनं कृत्वा लिखत :-

[illegible] [illegible] मैत्री [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पाठ-13

[illegible]

पुस्तकाकार्य - (अनुवाद)

इस प्रकार से सुनकर पहले वाणी शरीर से निकल गई तो एक साल तक बाहर रहकर वापस आ गई और पूछा आप लोगों का मेरे बिना जीवन कैसा था। प्राण आदि ने कहा जैसे गूँगा बोले बिना हुए भी, प्राण द्वारा साँस लेते हुए, आँखों से देखते हुए, कानों से सुनते हुए और मन से ध्यान करते हुए जीवित रहता है वैसे ही हम सब भी जीवित थे। उसके बाद आँखें निकलकर एक वर्ष तक बाहर रहकर वापस आ गई पूछा कैसे तुम सब हम दोनों के बिना जीवित थे, वे बोले जैसे अंधा देखते हुए, प्राण द्वारा साँस लेते हुए, मुख से बोलते हुए, कानों से सुनते हुए, मन से ध्यान करते हुए जीवित रहते हैं वैसे ही हम सब जी रहे थे।

शब्द	अर्थ
विवदमानाः	झगड़ा करते हुए
यस्मिन् उत्क्रान्ते	जिसके निकल जाने पर
संवत्सरम्	एक साल तक
प्रोष्य	बाहर रह कर
प्रत्यागता	वापस आ गई
श्वसन्तः	साँस लेते हुए
शृण्वन्तः	सुनते हुए
[illegible]	[illegible]
[illegible]	बहरे
[illegible]	निवास करते हुए
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible] उत्तर -

क) [illegible] विवदमानाः [illegible]
ख) [illegible]
ग) [illegible]
घ) [illegible]

पूर्णवाक्येन उत्तराणि -

क) इन्द्रियाणां मध्ये को विवादः सञ्जातः ?
उ) इन्द्रियाणां मध्ये अहं श्रेष्ठः - अहं श्रेष्ठः इति विवादः सञ्जातः।

ख) मनसः प्रस्थानस्य प्राणादिभिः किम् उत्तरं प्रदत्तम् ?
उ) मनसः प्रस्थानस्य प्राणादिभिः इदम् उत्तरं प्रदत्तम् यथा बालाः अमनस्काः प्राणैः श्वसन्तः, वाचा वदन्तः, चक्षुर्भ्यां पश्यन्तः, श्रोत्राभ्याम् शृण्वन्तः जीवन्ति तथैव वयमपि जीवनम् अधारयाम।

ग) नेत्रे प्रत्यागत्य किम् अपृच्छताम् ?
उ) नेत्रे प्रत्यागत्य अपृच्छताम् नेत्रे निष्क्रान्तवताम् [illegible] युष्माकं जीवनं कथं इति।

ग) यदा खगाः निर्भयं कूजन्ति तदा वाय्वादीनि इन्द्रियाणि विकसन्ति ?
उ) यदा खगाः निर्भयं कूजन्ति तदा वाय्वादीनि इन्द्रियाणि अवदन् - अहो अस्माकं श्रेष्ठः ! विभिन्नाः वयं भवन्तु।

यथानिर्देशमुत्तरत :-

क) 'सा संसारे जीवनं स्थापयति' अत्र 'सा' इति सर्वनामपदेन का अभिहिता ? वायुः।
ख) 'जलं पूयम् आवश्यकम् अस्ति जीवने' अत्र 'जीवने' इति विशेष्यस्य विशेषणपदम् किम् ? पूयम्।
ग) 'प्राणदम् अवदन् - यदा बालाः अकालमरणं जीवन्ति' अत्र अव्ययपदं किम् ? यदा।
घ) 'ते पुनः पलायितुम्' अत्र क्रियापदं किम् ? प्रत्यपद्यन्।

सन्धिं / सन्धिविच्छेदं -

क) इत्येतेषाम् - इति + एतेषाम्
ख) प्रजापतिरिप्राण - प्रजापतिम् + प्राण
ग) प्राणदमः - प्राण + अदमः
घ) वयमप्यजीवाम - वयम् + अपि + अजीवाम
ङ) वाय्वादीनि - वायु + आदीनि
च) तथैव - तथा + एव

20/8/19

पाठ-14

भारते चीनयात्रिकाः

शब्द	अर्थ
पारेहिमालयम्, हिमालयपारम्	हिमालय के दूसरी ओर
परिस्थितिः	अवस्था, दशा
ज्ञानपिपासवः	ज्ञान के प्यासे
स्वीक्रियन्ते	स्वीकार किए जाते हैं
कैश्चित्	कुछ लोग
जिज्ञासवः	ज्ञान के इच्छुक
परश्शताः	सौ से अधिक
साक्षात्कृत्य	साक्षात्कार करके
प्रति	की ओर
आकृष्य	खींचकर, आकृष्ट होकर
पदातिः	पैदल
प्रत्यागतः	लौट आया
प्रस्थितः	चल पड़ा था, प्रस्थान किया

एकपदेन उत्तरत -

क) यात्रिकाः अत्र कस्मात् देशात् आगताः ? चीनदेशात्
ख) चन्द्रगुप्त-विक्रमादित्यस्य शासनकाले कः भारतम् आगतः ? फाहियान्
ग) हर्षवर्धनः कस्य स्वागतम् अकरोत् ? ह्वेनसांगस्य
घ) इत्सिंगः कुत्र बौद्धधर्मग्रन्थान् अधीतवान् ? नालन्दायाम्

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क) फाहियान: कदा: कथं चीनं प्रत्यावृत्तोऽभवत् ?
⇒ फाहियान: उत्तर: ताम्रलिप्ति - पत्तनात् जलपोतेन सिंहलं गत्वा ततः चीनं प्रत्यावृत्तोऽभवत् ।

ख) चीनदेश: कुत्र अस्ति ?
⇒ भारतदेशस्योत्तरस्यां दिशि पारेहिमालयं विशालश्चीनदेशो वर्तते ।

ग) ह्वेनसांग: भारते कुत्र बहुकालं न्यवसत् ?
⇒ नालन्दाविद्यापीठे नानाग्रन्थानां प्रतिलिपिं कृत्वा स बहुकालं तु न्यवसत् ।

घ) इत्सिंग: भारते द्वादशवर्षाणि स्थित्वा किमकरोत् ?
⇒ भारते द्वादश वर्षाणि मुख्यतः नालन्दायां बौद्धग्रन्था-ध्यान् । तेन धर्म- शिक्षा- संस्कृतिविषयकं विवरणं लिखितम् ।

यथानिर्देशमुत्तरं लिखत :-

क) 'उत्तरस्यां दिशि' अत्र विशेषणपदं किम् ? उत्तरस्याम्
ख) 'सोऽपि मरुमार्गेण पद्भ्यां कष्टेन समागतः' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम् ? समागतः
ग) 'सर्वत्र तस्य आदरः जातः' अत्र अव्ययपदं किम् ? स
घ) 'सतीशिला - मरुभूमि - मार्गेण पदातिः सः इहागतः' अस्मिन् वाक्ये 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तः? ह्वेनसांगाय

सन्धि / सन्धिविच्छेदं -

क) तस्येतिहासः - तस्य + इतिहासः
ख) मतश्च - मतः + च
ग) प्रत्यावृत्तोऽभवत् - प्रत्यावृत्तः + अभवत्
घ) वक्ताप्यासीत् - वक्ता + अपि + आसीत्
ङ) देशेऽपि - देशे + अपि
च) देशादागताः - देशात् + आगताः

⇒ भारतदेशस्योत्तरस्यां — — — — — — गृह्यन्ते ।
भारत देश के उत्तर दिशा में हिमालय के दूसरी ओर विशाल चीनी का देश है । इसका इतिहास प्राचीन है । उस देश से आए हुए यात्रियों ने बौद्ध धर्म की खोज के लिए उत्सुक भारतीयों के मार्मिक परिस्थितियों का वर्णन किया है । उन यात्रियों के विवरण भारत के इतिहास के निर्माण में प्रमाण रूप में स्वीकार किए जाते हैं ।

⇒ भारतीय: — — — — — — — कृतवन्तः ।
भारतीय सम्राट प्रियदर्शी अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अनेक पंडितों को विदेश भेजा था उनमें से कुछ चीन देश में भी बौद्ध धर्म को प्रचारित किया । वहाँ के बौद्ध धर्म ग्रन्थ के मठ का निर्माण किए । वहाँ से ज्ञान की इच्छा रखने वाले भारत में आकर स्वयं बौद्ध रचनाओं को पठन स्थल और धर्म के रहस्य को जानने के लिए इच्छुक थे । सुना गया है कि वहाँ से उपस्थित तीन यात्री यहाँ पर आए थे किन्तु उनमें से तीन

महत्वपूर्ण यात्रियों का विवरण आज भी विद्यमान है। उनमें से एक फाहियान, ह्वेनसांग और इत्सिंग थे। मार्ग में विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करते हुए वे भारत की ओर आकृष्ट होकर के यात्रा करने लगे।

05/11/19

05/11/19

पाठ-5

चाणक्यनीति

1. दुर्जन - - - - - - - - - - विवर्जयेत् ।

⇒ सज्जनों की संगति करनी चाहिए, दुर्जन व्यक्तियों से नहीं क्योंकि दुर्जन व्यक्ति गुणरहित होता है। उदाहरण रूप से विभीषण ने संगति की और विजय राज्य को प्राप्त किया।

3. न - - - - - - - - - - शौरिणा ।

⇒ द्रोह में रुचि न करे, जो व्यक्ति दूसरों को सह नहीं पाते हैं और जिनकी वाणी में कठोरता है उनका सिर काट दिया जाता है जैसे कृष्ण के द्वारा शिशुपाल का सिर काट दिया गया था।

4. गुणैः - - - - - - - - - - रामकार्यमरक्षयः ।

⇒ गुणों की प्रशंसा करने से और लोगों के सम्मान से वृद्धि होती है जैसे हनुमान ने भगवान श्री राम की प्रशंसा की और स्तुति से कार्य करने में समर्थ बन गए थे।

5. कुर्यात् - - - - - - - - - - गतबुद्धिर्हतः ।

⇒ विपत्ति का संकट आए तो चिन्ता को छोड़कर धैर्य धारण करना चाहिए। धैर्य न धारण करने का फल है कि उनके पुत्र अश्वत्थामा के मारे जाने की बात सुनकर धैर्यहीन द्रोणाचार्य भी मारे गए।

7. औचित्य - - - - - - - - - - कलङ्किता ।

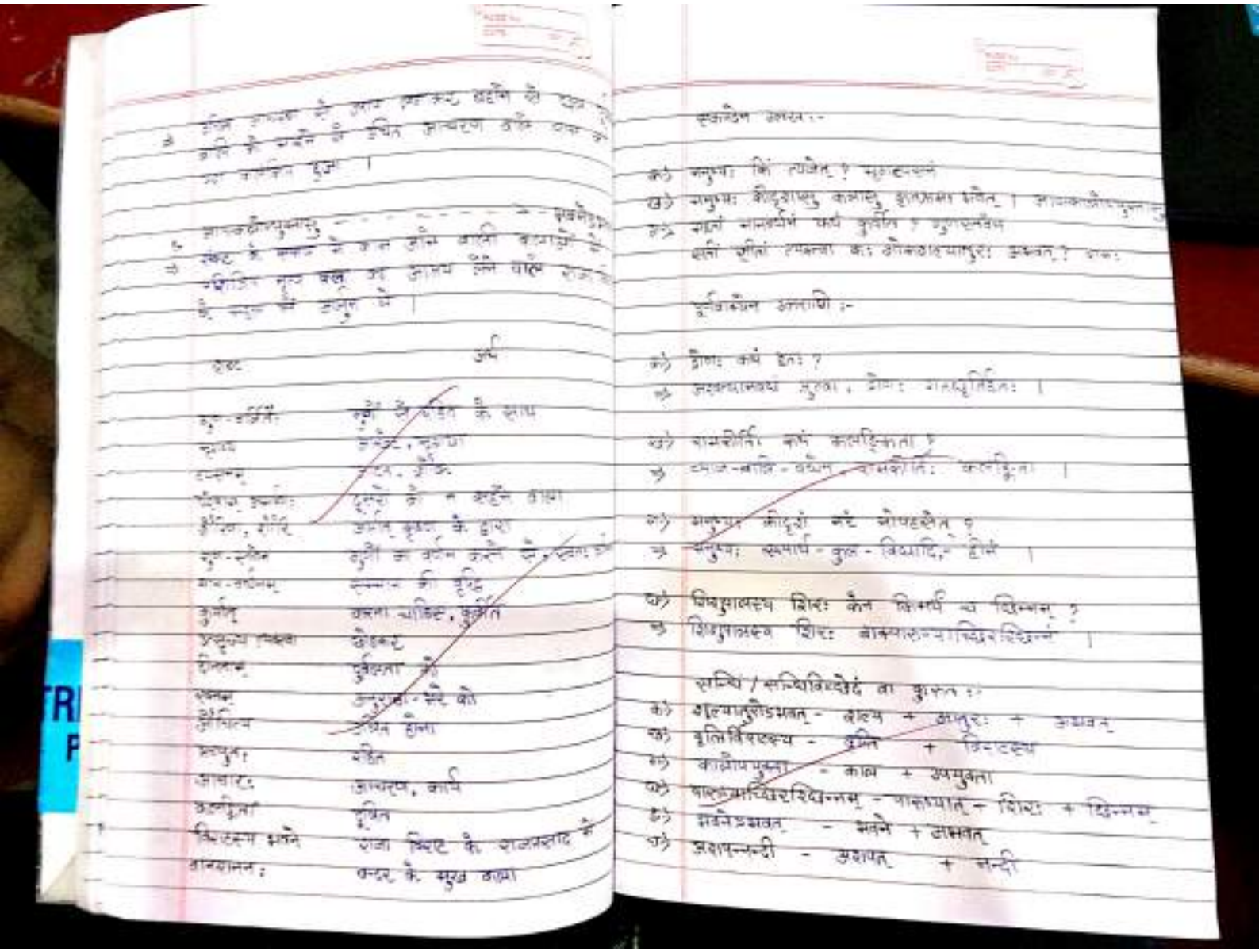

[illegible] राजा के [illegible] कर, उन्होंने [illegible]
→ [illegible] के [illegible] के उचित आचरण [illegible]
[illegible] हुआ ।

आनकर्णेऽपुत्रान् - - - - - - - - - वृद्धेषु
→ [illegible] के [illegible] के कन जीने वाली [illegible] के
→ [illegible] [illegible] [illegible] आश्रय लेने वाले राजा
के [illegible] के अनुरूप थे ।

शब्द	अर्थ
कुल-[illegible]	[illegible] के साथ
[illegible]	[illegible], [illegible]
[illegible]	[illegible], [illegible]
[illegible]	[illegible] के न [illegible] वाला
[illegible], [illegible]	[illegible] कृष्ण के द्वारा
कुल-[illegible]	कुलों का [illegible] करने [illegible]
[illegible]	सम्मान की वृद्धि
कुर्वीत	करना चाहिए, करें
[illegible]	छोड़कर
[illegible]	[illegible] को
[illegible]	[illegible] - [illegible] को
[illegible]	उचित होना
[illegible]	[illegible]
आचारः	आचरण, कार्य
[illegible]	[illegible]
[illegible]	राजा [illegible] के राजमहल में
वानराननः	बन्दर के मुख वाला

एकपदेन उत्तरत :-

क) मनुष्यः किं त्यजेत् ? [illegible]
ख) मनुष्यः [illegible] कलासु कुलसमं त्यजेत् । [illegible]
ग) [illegible] [illegible] कथं कुर्वीत ? [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] कः [illegible] अभवत् ? [illegible]

पूर्णवाक्येन उत्तरत :-

क) द्रोणः कथं हतः ?
उ) [illegible] [illegible], द्रोणः [illegible] ।

ख) रामकीर्तिः कथं कलङ्किता ?
उ) [illegible] - [illegible] - [illegible] रामकीर्तिः कलङ्किता ।

ग) मनुष्यः कीदृशं [illegible] [illegible] ?
उ) मनुष्यः स्वमार्ग - कुल - [illegible] [illegible] ।

घ) शिशुपालस्य शिरः केन किमर्थं च छिन्नम् ?
उ) शिशुपालस्य शिरः [illegible] छिन्नम् ।

सन्धि / सन्धिविच्छेदं वा कुरुत :-
क) [illegible]ऽभवत् - [illegible] + आतुरः + अभवत्
ख) [illegible] - [illegible] + [illegible]
ग) [illegible] - [illegible] + [illegible]
घ) चक्रात्शिरश्छिन्नम् - चक्रात् + शिरः + छिन्नम्
ङ) [illegible]ऽभवत् - [illegible] + अभवत्
च) [illegible] - [illegible] + [illegible]

श्लोकांशमेलनं कुरुत :-

क) लोभमूलानि पापानि — हिंसयातिमलीमसम् ।
ख) सर्वं सर्वं हि सर्वे — निर्दोषं न परित्यजेत् ।
ग) [illegible] — किरिटी अविष्कभवत् ।
घ) [illegible] — वासदर्मिर्गुणकृतिः ।
ङ) [illegible] — पुरुषा स्वार्थं न साधयेत् ।
च) हलाहलम् इव अन्यानि — सर्वं तन्मयान्तकः ।

०८/११/१९

सन्धि

सन्धि किसे कहते हैं।—

प्रश्न-1 स्वरसन्धि किसे कहते हैं?

उत्तर- दो स्वरों के मेल से उत्पन्न स्वर-वर्णों के विकार को स्वरसन्धि कहते हैं। जैसे- तव + अपि = तवापि, इति + एव = इत्येव, एकः + एकः = एकैकः ।

प्रश्न-2 स्वरसन्धि के कितने भेद होते हैं? नाम, उदाहरण दीजिए।

उत्तर- स्वर सन्धि के 5 भेद हैं :-

दीर्घसन्धिः - न + अस्ति = नास्ति, यदि + इदम् = यदीदम्, बालिका + आगता = बालिकागता ।

गुणसन्धिः - सता + इति = सतेति, कृपा + उपदेशः = कृपोपदेशः, महा + ऋषि = महर्षिः

वृद्धिसन्धि - एकः + एकः = एकैकः, महा + औषधिः = महौषधिः, तव + औत्सुक्यम् = तवौत्सुक्यम् ।

यणसन्धि - इति + अत्र = इत्यत्र, किरणेषु + इव = किरणेष्विव, पितृ + आदेशः = पित्रादेशः ।

अयादिसन्धि - साधो + ए = साधवे, नै + अकः = नायकः, पौ + अकः = पावकः ।

प्रश्न-3 व्यंजनसन्धि किसे कहते हैं?

उत्तर- व्यंजन वर्ण के बाद यदि स्वर या व्यंजन आए तो व्यंजन के परिवर्तन को व्यंजनसन्धि या हलसन्धि कहते हैं। जैसे- तत् + एव = तदेव ।

प्रश्न-4 विसर्गसन्धि किसे कहते हैं?

उत्तर- विसर्ग के परे स्वर या व्यंजन वर्ण आए तो विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्गसन्धि कहते हैं। जैसे- हरिः + तत्र = हरिस्तत्र ।